इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र
एवं
जम्मू-काश्मीर अध्ययन केन्द्र
के संयुक्त तत्त्वावधान में

शारदा लिपि पर ग्यारह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

अवधारणा पत्र

शारदापीठ का भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के साथ एक पुरातन सम्बन्ध रहा है। शारदपीठ में देवी सरस्वती का शारदा रूप में एक प्रतिमा थी। शारदा, भारत की ज्ञान-विज्ञान परम्परा की अधिष्ठात्री देवी के रूप में हैं। शारदा का ही दूसरा नाम सरस्वती है। भारतीय साहित्य में सरस्वती का अंकन तीन रूपों में हुआ है: एक पवित्र नदी के रूप में, नदी-देवी के रूप में जो सम्पन्नता व प्राचुर्यता प्रदान करती है, एवं वाग्देवी के रूप में जो समस्त विद्याओं की अधिष्ठात्री देवी है।
पौराणिक साक्ष्यों में, सती देवी के मृत शरीर से दाया हाथ कट कर इसी स्थान पर गिरा था। महाशक्तिपीठों में शारदा पीठ का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। शारदा पीठ, एक समय भारतीय विद्या का प्रमुख केन्द्र था। आचार्य शंकर अपनी ज्ञान साधना के कुछ बहुमूल्य समय इस शारदा पीठ की पवित्र भूमि में व्यतीत किया था। इस शारदा मन्दिर में चार द्वार थे जो चारों दिशाओं में खुलते थे। आचार्य शंकर से पूर्व, कई विद्वान् तीन द्वारों (पश्चिम, पूर्व, एवं उत्तर दिशा) से इस मन्दिर में प्रवेश कर चुके थे, किन्तु दक्षिण दिशा से किसी भी आचार्य का प्रवेश संभव नहीं हुआ था। "शंकरदिग्विजय" ग्रन्थ में हमें आचार्य शंकर के दक्षिण द्वार से शारदापीठ में प्रवेश करने एवं वहाँ के सर्वज्ञपीठ पर आसीन होने का उद्धरण प्राप्त होता हैं। किन्तु आज यह मन्दिर अपने अवशेषों के साथ पाक अधिकृत कश्मीर में हैं। इसी पीठ के नाम पर कश्मीर क्षेत्र को "शारदा क्षेत्र" कहा जाता है। "शक्तिसंगमतन्त्र" के सातवें पटल में भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के परिमाण को बताया गया है। इसी क्रम में कश्मीर के परिमाण को बताते हुए कहा गया है कि शारदापीठ से प्रारम्भ करके कुङ्कुमाद्रि (वर्तमान का कष्टवार या किश्तवाड) तक का प्रदेश कश्मीर है।

शारदामठमारभ्य कुङ्कुमाद्रितटान्तगः।
तावत्कश्मीरदेशः स्यात् पञ्चाशद्योजनात्मकः॥ ७.२२॥

इसी शारदा पीठ से शारदालिपि का उद्भव हुआ जिससे आगे चलकर अनेक अन्य लिपियों का विकास हुआ। शारदालिपि में ऋग्वेद एवं अथर्ववेद प्राप्त होते हैं। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि शारदा लिपि वैदिककालीन है।
एक सतत, अनवरत चिन्तन-धारा जम्मू-कश्मीर क्षेत्र में सदा प्रवाहित होती आयी है जिसका भारतीय दर्शन के आयाम को दीर्घतम बनाने में अद्वितीय स्थान है। इस क्षेत्र में हमारे आचार्यों ने जो चिन्तन-मनन किया, ज्ञान की वह अमूल्य निधि पाण्डुलिपियों के रूप में शारदा लिपि में ही संरक्षित है। कश्मीर की कला-संस्कृति व दर्शन को यदि उसके वास्तविक स्वरूप में समझना है तो शारदा लिपि का ज्ञान अपरिहार्य हो जाता है।
भारतीय सभ्यता व संस्कृति के सम्वर्धन में शारदा लिपि के अमूल्य योगदान को रेखांकित करते हुए कलाकोश विभाग, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली, शारदा लिपि पर ११ दिवसीय

(१३ नवम्बर २०१७-२३ नवम्बर २०१७) कार्यशाला का आयोजन करने जा रहा है । इस आयोजन में जम्मू-काश्मीर अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली, हमारा आकादमिक सहयोगी है । जम्मू-काश्मीर अध्ययन केन्द्र का मुख्य विषय जम्मू-कश्मीर क्षेत्र की कला-संस्कृति व दर्शन से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं का गम्भीर अध्ययन व प्रसार करना हैं ।

कार्यशाला का प्रारूप

कार्यशाला ११ दिनों की होगी । प्रति दिन, मध्यान्ह के बाद तीन घंटो का वर्ग होगा । इसके अतिरिक्त, शारदा लिपि को लेकर कार्यशाला में दो विशिष्ट व्याख्यान भी होगें ।

विशेष सम्पर्क के लिए

- पण्डित विद्या प्रसाद मिश्र
  कलाकोश विभाग
  इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
- डा. मयंक शेखर
  कलाकोश विभाग
  इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली
  मोबाइल नम्बर: 9711055441
  mayankcss@gmail.com
- अजय कुमार
  जम्मू-कश्मीर अध्ययन केन्द्र, नई दिल्ली
  मोबाइल नम्बर: 7006096129
  ajayiju@gmail.com